प्रात: क्लास ××× 1-6-1968 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे जानते हैं हमको श्रीमत मिल रही है हमको श्रीमत मिल रही हैं। तो श्रीमत को भी याद करना चाहिए ना। वह मत अथवा राय दे रहे हैं, पढ़ा रहे हैं। पहले2 कहते हैं बाप को और घर को याद करो। चलते-फिरते उठते-बैठते तुम अपने घर को क्यों नहीं याद करते हो। ऐसा कोई मनुष्य होगा जो अपने घर को भूलता होगा। भल विलायत में होगा तो भी अपना घर तो याद होगा ना। बाप भी बच्चों को श्रीमत देते हैं। तो तुमको उनको याद करना है तब ही तुम पवित्र बनेंगे। तुम छी छी हो। माया ने तुमको छी छी चुहड़यरा बना दिया है। तो बाप जो श्रीमत देते हैं उनको याद करना है। बाप कहते हैं अपने घर को याद करो। फिर अपने सुखधाम की भीयाद दिलाते हैं। यह तो भूलना न चाहिए। दुनिया में मानव मत तो अनेकानेक है। सभी छेक दो के मत पर ही चलते हैं। तुम बच्चों को अभी ईश्वरीय मत मिलता हैं। उनको भूलना है। यहां तो बच्चे बाप को भी भूल जाते हैं। तो अपने घर को भी भूल जाते हैं। सुखधाम को भी भूल जाते हैं। इसलिए मुख भुलाये जाते हैं। बाप कहते हैं क्या तुमको लज्जा नहीं आती। बाप और घर को भूले=तुम भूल जाते हो। घर में तुम जा नहीं सकते हो। क्योंकि अपवित्र हो। मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन जावेंगे और पवित्र धाम में पहुंच जावेंगे। कितना सहज समझाते हैं। मीठे2 बच्चे भूलो मत। माया भूलाने की कोशिश जरूर करेगी परन्तु तुम भूलो मत। बाप डायरेक्ट बैठ समझाते हैं। अभी तुमको अपने घर चलना है। अभी तुम नहीं चल सकते हो। क्योंकि तुम छी छी हो। पवित्र गुल2 बनेंगे तब ले जावेंगे। यह तो याद रहना चाहिए। बाप, घर राजाई यह तो सब याद करना अच्छा है ना। तुम जानते हो हम इस राजाई में जाने वाले हैं। तुम बच्चे 5000 वर्ष पहले भी स्वर्ग के मालिक थे। अभी फिर तुम बनते हो। इसमें मुंझने की तो दरकार नहीं। तुम ही थे। फिर यह बनना है। कैसे बनेंगे। याद की यात्रा से=से। वहां कैसे सभी बनेंगा क्या होगा=इस इस में मुंझने की तो दरकार ही नहीं। तुम्हारा घर जो था वही बनेगा इसका तुम फिक्र न करो। तुमको तो जन्म लेना ही है स्वर्ग में। फिर ज़ितना जो पुरुषार्थ करेंगे यह पढ़ाई है ही नर्क से स्वर्ग में जाने की। इनको भक्ति नहीं कहा जाता। यह है ज्ञान। भक्ति मार्ग में कोई भी किसकी आक्युपेशन बायोग्राफी को नहीं जानते। जैसे बन्दर हैं। बन्दर कुछ समझते हैं क्या। जहां भी कुछ देखेंगे हप करेंगे। मंदिर भी कुद कर जावेंगे। वहां से भी कुछ न कुछने आवेंगे। तुम भी जहां तहां घूस जाते हो। जो मिलता है खा लेते हो। पताकुछ भी नहीं। सिर्फ नाम सुन लिया है यह देवी देवतायें हैं। बस। और कुछ नहीं जानते। हनुमान के पास ले जावेंगे। कहेंगे हनुमान है। बस हाथ जोड़ो। पांव पड़ो। बस। यह भक्त मिलती है। बाप तो ऐसी मत देते नहीं। बाप तो कहते हैं पहले2 आक्युपेशन को जानो। नहीं तो अन्धश्रधा हो जाती है। अभी तुम बच्चो ने यह तो समझा है कल्प इतने वर्षों का है। भक्ति को कहा ही जाता है रावण राज्य। सिर्फ भक्ति नहीं। रावण राज्य कहा जाता हैं। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। दुनिया के मनुष्य तो बन्दर से भी बदतर हैं। मनुष्य मनुष्य की ही बुधि पर चलते हैं। तुम अखबारें आदि तो पढ़ते नहीं हो। अभी हरियाना का गर्वनर आया है कहते हैं मेरा गुरु है नन्दा। यह मुझे जो कहेंगे वह करेंगे। यह हमारा गुरु है। ढउवाईज़र है। अखबार में बैठ लिखा है। इसमें वह खुश होते हैं। वन्डर लगता है ना। वह गया कुरुक्षेत्र। वहां ताला है। तालाब में पानी होता है वर्षा= बरसा के कनेक्शन से। बरसात न पड़े तो तालाब का क्या हाल होगा। भल पानी सुख जाता है तो भी उनकोतीर्थ समझा जाते हैं। वहां जाकर अपन कोमिट्टी मलते हैं। तो क्या तालाब पतित पावन है। जब कि कहते हैं गंगा पतित पावनीहैं। अभी कहते हैं वहां जो किचड़पट्टी लगी पड़ी है उनको हेविन बनाओ। इसको हम केपीटल करेंगे। नन्दा जो कहेंगे सो हम करेंगे। गुरु जी जो कहेंगे वह हम करेंगे। यही हाल है बगुले भक्त की। भक्त लोग बगुले ही होते हैं। बगुला क्यों कहा जाता है, क्योंकि मास खाते रहते हैं। जहर खाते रहते। इसलिए हंस और बगुले इकट्ठे रह न सके। हंस तो कब झगड़ा नहीं करते। बहुत बगुलों से तंग होते हैं। हंस मोती चुगते हैं। वह गन्द खाते हैं। पक्के निश्चय वाले

बगुलों के साथ रह न सके। वह कोशिश करेंगे अलग रहने की, कहेंगे हम क्यों अपना टाईम वेस्ट करें। हम हं का तो काम ही है सभी को मोती चुगाना। प्रजापिता ब्रहमा कुमार-कुमारियां ब्राहमण हैं सभी हंस। बाकी तो हैं सभी शुद्र बगुले। शुद्र पैर में है ना। विराट रूप भी तो है। दिखाते हैं देवता क्षत्री वैश्य शुद्र ब्राहमणों को भूल गये हैं। शुद्र के बाद उनको ब्राहमण कौन बनावे। इसका किसको भी पता नहीं है। ब्राहमणा बनने बिगर हम देवता बन नहीं सकते। सभी बगुले ही बगुले हैं। नालेज कुछ भी नहीं। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। तुम गाते भी हो हे पतितपावन आओ तो अभी बाप कहते हैं पावन बनो। तुम काम चिक्षा पर चढ़ने से पतित बने हो। नहीं तो तुम बताओ पतित कैसे बने हो। विकार से ही मनुष्य पतित बनता है। अभी बाप भी कहते हैं काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। यह (ल0ना0) चित्र है ना। तुम इस डिनायस्टी में जावेंगे। मैं जब आता हूं तो नई दुनिया स्थापन करता हूं। यह ल0ना0 स्वर्ग के मालिक हैं ना। छोटेपन में राधे-कृष्ण, प्रिन्स-पिन्सेज थे। तुम यहां आये ही हो सतयुग का प्रिन्स प्रिन्सेज बनने लिए। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम वैकुण्ठ पवित्र दुनिया में जा सकते हो। काम पर जीत न पाई तो तुम स्वर्ग में जा नहीं सकते हो। स्वर्ग कहा ही जाता है सतयुग को। त्रेता में राम-सीता को भी भल देवता कहते हैं परन्तु 25% कम। दो कला कम हो गये ना। तुम जानते हो हम यहां आये ही हैं पर से नारायण बनने। इनकी ही फिर झूठी कथा बैठ बनाई है। जो जन्म जन्मान्तर तुम ने सुनी है। कब राम सीता बनने लिए कथा नहीं सुनी है। क्योंकि वह स्वर्ग तो है नहीं। रामायण आद के जो भी कथाएं हैं सुनते आये हो वह सभी हैं नर्क में ले जाने लिए। दुर्गति ही हुई है। मनुष्य मनुष्य को कब सदगति दे न सके। अभी तुम अभी तुम ब्राहमण बच्चों को श्रीमत मिलती है। मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह भी समझते हो नम्बरवार याद करते हैं। डिटी डिनायस्टी में भी नम्बरवार होंगे ना।

बाप समझाते हैं तुम्हारे पास जो कुछ है वह ईश्वर की अमानत है। कहते भी है यह बच्चा भगवान ने दिया है। धन होगा तो भी कहेंगे ईश्वर ने दिया है। ईश्वर की कृपा है। सच्च2 ईश्वर की कृपा है। क्योंकि ईश्वर अर्थ जो कुछ दान-पूण्य आद करते हैं तो फिर दूसरे जन्म में अल्प काल के लिए मिलता है। जैसे2 कर्म करते हैं, कोई धर्मशाला बनाते हैं, कोई युनिवर्सिटी, स्कूल बनाते हैं तो बिदया अच्छी मिलती है। जैसा कर्म वैसा फल मिलता है। मनुष्य मात्र तो ढेर के ढेर हैं। एक न मिले दूसरे से। यह ड्रामा है ना। इसमें कुछ भी फर्क पड़ नहीं सकता। जो जिसको पार्ट मिला हुआ है वह जरूर बजावेंगे। जिसने जो पार्ट कल्प पहले बजाया होगा वही बजावेंगे। यह है ड्रामा। तुम स्थूल वतन सूक्ष्मवतन दोनो का बताते हो। मूलवतन में भी एक्टर्स नम्बरवार ही रहते हैं। फिर अपने2 समय पर आते हैं। परन्तु अवतार एक को कहा जाता है। यूं तो सभी आत्माएं अपना2 शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। जब ड्रामाका चक्र पूरा होता है तो बाप कहते हैं मुझे आना पड़ता है। माया का राज़ पूरा होता है। तो मैं फिर आकरतुमकोसतयुग त्रेता का राज-भागदेता हूं। भगवान ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। फिर रावण राज्य शुरु होता है। रावण को जलाते हैं। वह समझते हैं परमपरा से जलाते आते हैं। बाप समझाते हैं पहले तो तुम एक ही शिव की पूजा करते थे। उस समय यह सभी कहां से आये। वह तो पीछे आते हैं। मनुष्य तो सभी कह देते परमपरा से अर्थात हमेशा चला आ है कब बन्द होता ही नहीं। बिल्कुल जैसे ठिक्कर पत्थर बुधि है। कोई अच्छी रीत पढ़ते नहीं हैं तो कहते ना ना तुम तो पत्थर बुधि हो कुछ भी पढ़ते नहीं। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को भी ऐसे ही कहते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुमने इजाम किया आप आवेंगे तो हम आप के ही मत पर चलेंगे। जैसे वह गुर्वनर कहता है हम नन्दा कमत पर ही चलेंगे। यह फिर है बेहद की बात। बाबा हम आ के श्रीमत से हम श्रेष्ठ बनेंगे। श्रीमत मिलती है एक। भ्रष्टाचारियों की तो है भ्रष्टाचारी मत। रावण राज्य

यह तुम पहले नहीं समझते थे। मनष्य जो सुनाते थे तुम भी सत्य2 कहते थे। अभी अज्ञान अंधेरे में साये हुये हैं ना। तुम भी कुम्भ करण के नींद में थे अभी बाबा ने जगाया है बापकहते हैं जिस रथ में मैंने प्रवेश किया है यह भी बन्दर बुधि था। सभी का हेड था। फर्स्ट सो लास्ट लास्ट सो फर्स्ट। फर्स्ट में जो डिनायस्टी वह फिर भी होंगी। सो भी नम्बार । सभीके 84 जन्म नहीं होते। कम कम भी होते जाते हैं। अभी तो बाप यहां है कोई ऊपर से आवेगा उनका क्या जन्म होगा। एक जन्म कर के समझो। कोई का दो कोई का तीन हो। परन्तु नहीं। बाप कहते हैं एक।क्योंकि जो भी नये आते हैं उनकी महिमा होती है। फिर ऊपर में सब पत्ते पिल्ले हो जाते हैं।झाड़ के राज़ को भी बच्चे ने समझा है औरसमझाने लायक बने हैं। तुम्हारा एक चित्रभी काफी है। श्याम सुन्दर दिखाते हैं। बोलो पुनर्जन्म तो जरूर मनुष्य ही लेते हैं ना। सतयुग से शुरू होता है। श्रीकृष्ण तो छोटा बच्चा है। दुनियाइन बातों को नहीं जानती है। पत्थर बुधि हैं। हम भी कम नहीं थे। सब से जास्ती पत्थर बुधि थे इसलिए सब से पहले पारस बुधि बन रहे हैं। गाया भी जाता है पत्थर बुधि सो पारस बुधि, पत्थर बुधि सो पारस बुधि। पारस राज्य सो पत्थर राज्य। पारस नाथ और पारसनाथनी का राज्य था ना। नेपाल में फिर पारस नाथ के बदले पशुपति नाथ कह देते हैं। यानि जनावरों का का नाथ। पशुपति नाम है ना। बोलो जनावर तो सभी हैं ही। तुम खुद ही जनावर होक्यो कि तुम अपने बाप को नहीं जानते हो। अपने से भी जास्ती बाप की निन्दा कर दी है। अपन को 84 लाखे योनियां कहते हे बाप को तो ठिक्कर पत्थर कण2 में ले गये हैं। बाप कहते हैं जब2 भारत को सा होल होता है यदा× यदाहि· · · यह अक्षर गीता में ही हैं और कोई शास्त्रों में नहीं हैं।यह सभी शास्त्र हैं मनुष्य मत की। श्रीमत नहीं है।क्योंकि गीता का ज्ञान तो भगवान ने ही सुनाया है। उनका एक ही शास्त्र है। मनुष्य मत पर चलते2 तुम तमोप्रधान हो गये हो। फिर फिर श्रीमत से सब का कल्याण हो जाता है। मनुष्य सृष्टि के बदले देवी सृष्टि स्थापन हो जाती है। बाप फिर समझा रहे हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते जाते हैं। बाप तो चाहते हैं बहुत समझाने वाला तैयार हो निकले। परन्तु निकलते नहीं हैं। कोई को क्या बन्धन कोई को क्या। सर्विस न करेंगे तो इतना फल भी नहीं मिलेंगा। बाप कोई राज़ी थोड़ी ही होंगे। बाप तो एक एक को जानते हैं। कि हमको याद करते वाले2 व 2 हैं। सर्विस करने वाले कौन2 हैं। आते तो बहुत हैं परन्तु वह सभी हैं अल्प काल के लिए। बाप जानते हैं कि आत्मा कोई काम का नहीं। तुच्छ बुधि है। यह फर्स्ट क्लास बुधि यह सेकण्ड क्लास बुधि यह थर्ड क्लास बुधि है। यह क्या किसको खेंच सकेंगे। सामने ऐसे आकर खड़े होते हैं जैसे कि बहुत याद करते हैं।भल बाबा प्यार बहुत करते हैं क्योंकि डिप्लोमेट है ना। जानता हूं अच्छी रीत से फिर भी प्यार से और आर से समझाता हूं तुम सर्विस नहीं करते हो तो सच्चा प्यार भी नहीं करता हूं।अच्छे बच्चे जो हैं उन तरफ दिल खेंचती है। यह आज्ञाकारी सपुत है। पूछते हैं बाबा क्या करें। बाबा क्या देते हैं। अपने काम लगाओ। बाबा खुद कहते हैं कांटों पर भी प्यार तो फूलों पर भी प्यार। कलियुग में कांटे भी हैं तो फूल भी हैं। सतयुग में दोनो इकट्ठे नहीं होते। कई समझते हैं बाबा थोड़ें ही यह कुछ जानता है हमारी चलन को।और बाबा को जानने की भी क्या दरकार है। जो करता है सो पता है। मुझे जानने वा देखने की दरकार थोड़ें ही है। याद करेंगे तो उसका सभी फल तुमको ही मिलेंगा। याद करेंगे ही नहीं सिर्फकहते रहेंगे तो अपना पद भी भ्रष्ट कर देंगे। बाबा जानने की वा देखने की क्या पड़ी है। कोई विकार में जाते हैं और यहां कहे हम निर्विकारी हैं तो झूठ बोला तो सौगा डन्ड उनको पड़ेंगा और ही अपन को घाटा में डाला। यहां कईयों से पूछा जाता है कोई से अवज्ञा की वा किसको दुःख दिया । तो कोई भी हाथ नहीं उठाते। मेरे ध्यान में 300में से दस बीस के सिवाय सभी को हाथ उठाना चाहिए।क्योंकि बाप के मुख फरमान को मानते ही नहीं हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो । मूल बात है यह याद नहीं करते हैं यह भूल कुई नम

याद नहीं करते है यहभूल हुई ना। अपना ही पद भ्रष्ट करदेते। परन्तु देहअभिमान कारण अपनी भूल बताते नहीं है। भूलें वास्तव में सभी करते हैं सभी को हाथ उठाना पड़े। अभी अभूल बन जाये तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। बाप को याद नहीं करते तो भूल है। यर्थात याद से भी तुम सम्पूर्ण पवित्र बनते हो। बाप कहते हैं हे बच्चों मामेकं याद करो। याद नहीं करते हैं तो जरूर एक दो को दुःख भी देते होंगे। अपन को दुःख देते होंगे। सम्पूर्ण 16कला तो कोई बना नहीं हैं तो जरूर कोई न कोई भूल होती हैं। मुख्य बात है यह बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो बाप को याद करो तो जन्मजन्मान्तर के पाप बोझा जो सिर पर है वह उतर जावेंगा। पतितपावन बाप को साधु सन्त आद सभी भूले हुये हैं। समझते हैं पानी में स्नान करने से पावन बन जावेंगे। तालाब में भी जाते हैं पानीसुख जाता है तो भी उनका तीर्थ कायम रहता है। थोड़ा पानी भी उसमें डाल मिट्टी बैठ मलते हैं। पत्थर को भी पूजे= पूजेंगे। माथा पर रखेंगे जैसे भैंस को मिट्टी में मजा आता हैं ना। वैसे तीर्थवासी भी जैसे भैंस बुधि हैं। भक्ति मार्ग बनप ही भैंस बुधि के लिए हैं। समझते कुछ भी नहीं। तवाई मिशल सिर्फ देखाते रहते हैं। भक्ति मार्ग में सभी हैं भैंस बुधि। गर्मी बहुत लगती है तो= इसलिए जाकर ठंडे पानी में बैठते हैं। उन में गर्मी है विकार की। इसलिए तुमको चाहिए ठंढी शीतलता। वह काम है अग्नि जलाती है। मैं ज्ञान चिक्षा पर बिठाकर शीतल बनाता हूं। काम चिक्षा पर बैठ जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर चढ़ती गई है। भक्ति पाप कराती हैं। काला भैंस बुधि बन पड़ते हैं। भैंस काली होता है। कृष्ण को भी काला बनाया है ना। भगवानुवाचः काम चिक्षा पर बैठने से काले बन जाते हैं। इसलिए कृष्ण को काला दिखाया है। इस पर भी मनुष्य बिगड़ते हैं। कहते हैं तुम ब्रह्मा कुमारियां इनको काला कहते हो। यह तो सर्वव्यापी है। यह काला कैसे हो सकता। अरे तुम ने ही तो काला चित्र बनाया है। हम इसका अर्थ समझाते हैं। यह गोल्डेन एज में थे। फिर आयरन एज में आये। यह है ही आयरन एजेड वर्ल्ड। लोहा काला होता है। काम चिक्षा चिक्षा पर चढ़ी हुई आत्मा काली होती हैं। तो शरीर भीकाला बन जाता है। पवित्र आत्मा तो शरीर भी पवित्र मिलेगा। तुम यहां आये ही हो आत्मा को पावत्र बनाने। अभीदेखो मनुष्य मनुष्य को गुरु बनाते हैं। तो बड़ा कौन? गर्वनर या व उनका मिनिस्टर? बिचारों को कुछ भी पता नहीं हैं। सभी काले आयरन एजेड भैंस बुधि हैं। भक्ति भैंस बुधि बना देती हैं मैं फिर गोरा बनाता हूं। कृष्ण को श्याम सुन्दरकहते हैं ना। कोई भी नहीं जानते। कृष्ण तो सतयुग का मालिक था वह फिर कहां गया। 84 पूनर्जन्म तो ली है ना। सब से पहले नम्बर में कौन हैं। तो= जो भूवनन से मुझे छोड़कर आते हैं। मुख्य तो कृष्ण को ही कहेंगे। लक्ष्मी-नारायण भी 25-30 वर्ष वर्ष के बाद नाम पड़ता है। शादो के बाद नाम बदलता है। तो पुनर्जन्म लेते2सांवरा बन जाते हैं। तो बाप भैंस बुधि सेआकर ईश्वरीय बुधि बनाते हैं। मनुष्य मत से काले बन जाते हैं। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत। भक्ति सिखलाने वाले असुर आसुरी बुधि हैं। भक्ति करते2 तमोप्रधान बन जाते हैं। हिसाब भी बताया है ना। जो सब से जास्ती भक्ति करते हैंउनको ह फल मिलता है। 2। जन्म पूरे हुये फिर बाममार्ग में जाते हैं। आत्मा पुनर्जन्म लेती रहती, पुनर्जन्म में नाम रूप देशकाल सभी बदल जाते हैं। अभी कृष्ण तो है नहीं। हां जो होकर गये हैं उनके चित्र हैं। पूछते हैं परन्तु अर्थ रहित। अच्छा मीठे बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग।

बम्बई में पुष्पशान्ता का कोलावा में नया सेन्टर खुला है। जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं। :-

x

BRAHMA KUMARIS
Flat No.33
ANJALI
Near radio club
Colaba
BOMBAY-5